जैन-दर्शन में 'द्रव्य' की धारणा और विज्ञान

—डॉ. वीरेन्द्र सिंह
५—झ—१५, जवाहर नगर
जयपुर—३०२००४

वैज्ञानिक शक्ति-मूल्य और ज्ञान-मूल्य

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। विज्ञान एक ऐसी सबल मानवीय क्रिया या अनुशासन है जिसने ज्ञान के क्षेत्रों को केवल प्रभावित ही नहीं किया है, वरन् विश्व और ब्रह्माण्ड के रहस्यों को उद्घाटित किया है। वैज्ञानिक-ज्ञान के दो पक्ष हैं जो दो प्रकार के मूल्यों की सृष्टि करते हैं—एक शक्ति-मूल्य और दूसरे प्रेम या ज्ञान-मूल्य। जहाँ तक शक्ति-मूल्य का सम्बन्ध है, वह तकनीकी विज्ञान से सम्बन्धित है जो अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर प्रतिस्पर्द्धा का विषय बनता जा रहा है। इसके द्वारा शक्ति और संघर्ष मूल्यों की इस कदर वृद्धि होती जा रही है कि आधुनिक मानव विज्ञान को केवल शक्ति-संचय का साधन मानता जा रहा है। दूसरी ओर, विज्ञान का वह महत्त्वपूर्ण पक्ष है जो प्रेम या ज्ञान-मूल्य का सृजन करता है जिसकी ओर हमारा ध्यान कम जाता है। सत्य में विज्ञान का यह ज्ञान-मूल्य ही 'प्रतिमानों' की रचना करता है जो मानवीय संदर्भ को अर्थवत्ता प्रदान करता है। इसी से ज्ञान का महत्व मानव तथा विश्व से है और प्रत्येक मानवीय क्रिया मानव और उससे सम्बन्धित विश्व-संदर्भ के लिए ही है। यह ज्ञान प्राप्त करने का मनोभाव विज्ञान का भी सत्य है। रहस्यवादी, प्रेमी, कवि, दार्शनिक, सभी सत्यान्वेषी होते हैं, यह बात दूसरी है कि उनका 'अन्वेषण' उस पद्धति को स्वीकार न करता हो जो वैज्ञानिक अन्वेषण में स्वीकार की जाती है। इस कारण से रहस्यवादी और कलाकार हमारे लिए किसी भी दशा में कम सम्मान के पात्र नहीं है, क्योंकि एक वैज्ञानिक के समान ही वे भी ज्ञान और सत्य के अन्वेषी हैं।

प्रेम के प्रत्येक स्वरूप के द्वारा हम 'प्रिय' के ज्ञान का साक्षात्कार करना चाहते हैं। यह साक्षात्कार शक्ति प्राप्त करने के लिए नहीं होता है, वरन् उसका सम्बन्ध आन्तरिक उल्लास और ज्ञान के साक्षात्कार के लिए होता है।[1] अतः ज्ञान स्वयं में एक मूल्य है जो वैज्ञानिक ज्ञान के लिए भी उतना सत्य है जितना अन्य ज्ञान-क्षेत्रों के लिए। विज्ञान का आरम्भ इसी प्रेम-ज्ञान का रूप है क्योंकि वैज्ञानिक भी वस्तुओं, दृश्यों, घटनाओं और पिण्डों आदि से एकात्म की अनुभूति कर उनके रहस्य का उद्घाटन करता है।

---

१. द साइन्टिफिक इन्साइट, बर्ट्रेंड रसेल, पृष्ठ २००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैज्ञानिक सापेक्षवाद और स्याद्वाद

ज्ञान के इस व्यापक परिप्रेक्ष्य से एक बात यह स्पष्ट होती है कि विज्ञान और जैदर्शन का सम्बन्ध 'सापेक्षवाद' की आधारभूमि पर माना जा सकता हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि स्याद्वाद की मान्यताओं का संकेत हमें आइंस्टाइन के सापेक्षवादी सिद्धान्त में प्राप्त होता है। यह समानता इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि जैन मनीषा में विश्व के यथार्थ के प्रति एक स्वस्थ आग्रह था। विश्व और प्रकृति का रहस्य 'सम्बन्धों' पर आधारित है जिन्हें हम निरपेक्ष (एब्सल्यूट) प्रत्ययों के द्वारा कदाचित् हृदयंगम करने में असमर्थ रहेंगे। द्रव्य या पुद्गल की सारी अवधारणा इसी सापेक्ष तत्व पर आधारित हैं। वर्तमान भौतिकी तथा गणितीय प्रत्ययों के द्वारा 'द्रव्य' (मैटर) का जो भी रूप स्पष्ट होता है, वह कई अर्थों में वैज्ञानिक अनुसंधान में प्राप्त निष्कर्षों से समानता रखता है।

विकासवाद और जीव-अजीव की धारणाएँ

विज्ञान का एक प्रमुख सिद्धान्त विकासवाद है जो हमें विश्व स्वरूप पर एक 'दृष्टि' प्रदान करता है। डार्विन आदि विकासवादियों ने जैव और अजैव (ऑरगैनिक एण्ड इन-ऑरगैनिक) के सापेक्ष सम्बन्ध को मानते हुए उन्हें एक क्रमागत रूप में स्वीकार किया है। इसका अर्थ यह हुआ कि जैव (चेतन) और अजैव (जड़) के बीच शून्य नहीं है, पर दोनों के बीच एक ऐसा सम्बन्ध है जो दोनों के 'सत्' स्वरूप के प्रति समान महत्व की ओर संकेत करता है। जैन-दर्शन में जीव और अजीव की धारणाएँ विज्ञान में प्राप्त उपर्युक्त जैव और अजैव के समान हैं और ये दोनों धारणाएँ सत्य और यथार्थ हैं। यहाँ पर यह ध्यान रखना आवश्यक है कि वेदांत तथा चार्वाक दर्शन के समान यहाँ पर द्रव्य (मैटर) चेतन या जड़ नहीं है, पर द्रव्य (पुद्गल) की भावना में इन दोनों तत्त्वों का समान समावेश है। इस सारे विवेचन से एक अन्य सत्य यह प्रकट होता है कि सत्, द्रव्य, पुद्गल, यथार्थ–सब समान अर्थ देने वाले शब्द हैं। इसी से जैन आचार्यों ने 'द्रव्य ही सत् है और सत् ही द्रव्य है' जैसी तार्किक प्रस्थापनाओं को निर्देशित किया। उमास्वाति नामक जैन आचार्य ने यहाँ तक माना कि 'काल भी द्रव्य का रूप है'। जो बरबस आधुनिक कण-भौतिकी (पार्टिकिल फिजिक्स) की इस महत्वपूर्ण प्रस्थापना की ओर ध्यान आकर्षित करता हैं कि काल और दिक् भी पदार्थ के रूपांतरण है और यह रूपान्तरण पदार्थ के तात्विक रूप की ओर भी संकेत करता है। पदार्थ या द्रव्य का यह रूप यथार्थवादी अधिक है क्योंकि जैन-दर्शन भेद को उतना ही महत्व देता है, जितना अद्वैतवादी अभेद को। पाश्चात्य दार्शनिक ब्रैडले ने भी भेद को एक आवश्यक तत्त्व माना है जिसके द्वारा हम 'सत्' के सही रूप का परिज्ञान कर सकते हैं।[2]

द्रव्य की रूपान्तरण प्रक्रिया तथा भेद

जैन-दर्शन की एक महत्वपूर्ण मान्यता यह है कि द्रव्य—उत्पाद, व्यय और ध्रौव्ययुक्त है। यदि विश्लेषण करके देखा जाये तो द्रव्य की अवधारणा में एक नित्यता का भाव है जो न कभी नष्ट होता है और न नया उत्पन्न होता है। उत्पाद और व्यय के बीच एक स्थिरता रहती है (या तुल्यभारिता/बैलेंस) रहती है जिसे एक पारिभाषिक शब्द ध्रौव्य के द्वारा इंगित किया गया है। मेरे विचार से ये सभी दशाएँ द्रव्य की गतिशीलता और सृजनशीलता का परिचय देती हैं। विज्ञान के क्षेत्र में फ्रेड हॉयल ने पदार्थ का विश्लेषण करते हुए "पृष्ठभूमि पदार्थ" की कल्पना की है जिससे पदार्थ उत्पन्न होता है और फिर, उसी में विलीन हो जाता है—यह क्रम निरन्तर चला करता है"।[3] इस प्रकार

---

१ जैन-दर्शन डा० मोहनलाल मेहता, पृष्ठ १२४

२ भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, डा० हजारीलाल जैन, पृष्ठ १८

३ दि नेचर आफ यूनीवर्स, फ्रेड हॉयल, पृष्ठ ४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सृजन और विलय के बीच समरसता स्थापित करने के लिए "ध्रौव्य" (स्थिरता) की कल्पना की गई। त्रिमूर्ति (ट्रिनिटी) की धारणा में ब्रह्मा, विष्णु और महेश क्रमशः सृजन, स्थिरता या तुल्य-भारिता तथा विलय के देवता हैं जो प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति की तीन शक्तियों (सृजन, सामरस्य और विलय) के प्रतीक हैं। द्रव्य का यह अनित्य रूप विज्ञान के द्वारा भी मान्य है, जहाँ पदार्थ रूपान्तरित होता है न कि विनष्ट। विज्ञान और जैन मत में द्रव्य का यह रूप समान है, पर एक अन्तर भी है। जैन दर्शन में "आत्मा" नामक प्रत्यय को भी द्रव्य माना गया है जिस प्रकार आकाश या स्पेस (आकाशास्तिकाय) काल या टाइम (कालास्तिकाय) आदि को द्रव्य के रूप में ही माना गया है। विज्ञान के क्षेत्र में द्रव्य को व्यापक अर्थ में ग्रहण नहीं किया गया है जितना कि जैन-दर्शन में। आधुनिक विज्ञान और विशेषकर भौतिकी, गणित और रसायन की अनेक नवीन उपपत्तियों में पदार्थ के सूक्ष्मतर तत्वों की ओर संकेत मिलता है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक-दार्शनिक बर्ट्रेन्ड रसेल ने पदार्थ के स्वरूप पर विचार करते हुए कहा है कि "पदार्थ वह है जिसकी ओर मन सदैव गतिशील रहता है, किन्तु "वह" उस तक कभी पहुँच नहीं पाता है। आधुनिक पदार्थ भौतिक नहीं है।"[1]

जैन-दर्शन में पदार्थ के उपर्युक्त स्वरूप से एक बात यह स्पष्ट होती है कि यहाँ द्रव्य एक ऐसा प्रत्यय है जो "सत्ता-सामान्य" का रूप है। सत्ता सामान्य के छह भेद किये गये हैं—धर्मास्तिकाय से लेकर कालास्तिकाय तक जिसका संकेत ऊपर किया जा चुका है। जहाँ तक पुद्गल या पदार्थ का सम्बन्ध है, वह द्रव्य का एक विशेष प्रकार है, जिसका विश्लेषणात्मक विवेचन जैन आचार्यों ने किया है। परमाणुवाद का पूरा प्रासाद पुद्गल के सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित रहा है जो आधुनिक परमाणुवाद के काफी निकट है।

जैन-परमाणुवाद और विज्ञान

पुद्गल की संरचना को लेकर जैन-दर्शन ने जो विश्लेषण प्रस्तुत किया है, वह पदार्थ के सूक्ष्म तत्वों (कणों) की ओर संकेत करता है। विज्ञान ने पदार्थ की सूक्ष्मतम इकाई को परमाणु कहा है जिसके संयोग से "अणु" की संरचना होती है, और इन "अणुओं" के संघात से उत्तक (टीशू) का निर्माण होता है। जबकि संरचना में कोष (सेल) सूक्ष्मतम इकाई है जिसके संयोग से अवयव (आर्गन) का निर्माण होता है। इस प्रकार समस्त जैविक और अजैविक संरचना में अणुओं, परमाणुओं कोषों तथा अवयवों का क्रमिक साक्षात्कार होता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण सृष्टि का "क्रमिक" विकास हुआ है। जैन आचार्यों की परमाणु और स्कन्ध की धारणाओं में उपर्युक्त तथ्यों का समावेश प्राप्त होता है। जैन मतानुसार परमाणु पदार्थ का अन्तिम रूप है जिसका विभाजन सम्भव नहीं है। यह इकाई रूप ऐसा है जिसकी न लम्बाई-चौड़ाई और न गहराई होती है अर्थात् जो स्वयं ही आदि, मध्य और अन्त है। आधुनिक विज्ञान ने परमाणु को विभाजित किया है और उसकी आन्तरिक संरचना पर प्रकाश डाला है। परमाणु की संरचना में प्राप्त इलेक्ट्रॉन, प्रोटान, पाजिट्रान तथा न्यूट्रान आदि सूक्ष्म अंशों की जानकारी आज के विज्ञान ने दी है। दूसरी ओर, सौर मण्डल की संरचना के समान परमाणु की संरचना को स्पष्ट किया है। इस वैज्ञानिक प्रस्थापना के द्वारा यह दार्शनिक तथ्य भी प्रकट होता है जो पिण्ड में है, वही ब्रह्माण्ड में है। अतः मुनि नगराज जी ने भी यह मत रखा कि विज्ञान में

---

1 Matter is something in which Mind is being led, but which it never reaches. Modern matter is not material.

—उद्धृत, फिलासिफिकल एसपैक्ट्स आफ माडर्न साइंस, सी. ई. एम. जोड, पृष्ठ ८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमाणु का सूक्ष्म रूप नहीं मिलता है जैसा कि जैन-दर्शन में।[1] यह बात उपर्युक्त विवेचन के आधार पर पूर्ण सत्य नहीं है। सच तो यह है कि अधुनातन वैज्ञानिक प्रगति ने परमाणु की मूल्यवान व्याख्या प्रस्तुत की है। स्कन्ध की धारणा विज्ञान की अणु (Molecule) भावना से मिलती है क्योंकि दो से अनन्त परमाणुओं के संघात को स्कन्ध (अणु) की संज्ञा दी गई है जो विज्ञान और जैन-दर्शन के समान प्रत्यय हैं।

स्कन्ध-निर्माण प्रक्रिया

अब प्रश्न उठता है कि परमाणु स्कन्ध रूप में कैसे परिणत होते हैं? इसका उत्तर विज्ञान तथा जैनदर्शन में अपने-अपने तरीके से दिया है जिसमें अनेक समानताएँ हैं। एक सबसे महत्वपूर्ण समानता यह है कि दोनों में परमाणुओं के संघात से स्कन्ध (अणु) का निर्माण होता है जिसका हेतु धन और ऋण विद्युत हैं (+तथा—) जिसके आपसी आकर्षण से स्कंध तथा पदार्थ का सृजन होता है। जैन आचार्यों ने परमाणुओं के स्वभाव को 'स्निग्ध' और रूक्ष (+और—) माना है जिससे रूक्ष तथा स्निग्ध परमाणु बिना शर्त बंध जाते हैं। इसके अतिरिक्त रूक्ष-परमाणु रूक्ष से, और स्निग्ध परमाणु स्निग्ध से, तीस से लेकर यावत् अपने गुणों का बन्धन प्राप्त करते हैं। परमाणुओं के ये दो विपरीत स्वभाव उनके आपसी बन्ध के कारण हैं। आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से पदार्थ में धन विद्युत (Positive Charge) और ऋण विद्युत (Negative Charge) के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। यहाँ पर स्पष्ट रूप से ऐसा लगता है कि जैन विचारकों ने परमाणु तथा पदार्थ के उन तत्वों को प्राप्त कर लिया था जिनकी ओर विज्ञान गतिशील है। श्री बी. एल. शील का भी यही मत है कि जैन दार्शनिक इस तथ्य को पूरी तरह जानते थे कि धन और ऋण विद्युतकणों के संयोग से विद्युत की उत्पत्ति होती है।[2] आकाश में चमकने वाली विद्युत का कारण भी परमाणुओं का स्निग्ध तथा रूक्षत्व गुण है। वनस्पति तथा प्राणी जगत में भी ऋण तथा धन-विद्युत का रूप यौन आकर्षण में देखा जा सकता है। इस प्रकार धन और ऋण का विस्तार समस्त सृष्टि में व्याप्त है और यहाँ आकर जैन-दर्शन का वैज्ञानिक स्वरूप स्पष्ट होता है।

परमाणु के स्पर्श-गुण और विज्ञान

जैन-दर्शन में परमाणुओं के स्पर्श अनेक माने गए हैं जो प्रत्यक्ष रूप से परमाणुओं के गुण तथा स्वभाव को स्पष्ट करते हैं। इन्हें स्पर्श इसलिए कहा जाता है कि इन्द्रियाँ इन्हें अनुभूत करती हैं। इन स्पर्शों की संख्या आठ है जैसे, कर्कश, मृदु, लघु, गुरु, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष और शीत। इस प्रकार के विभिन्न गुण वाले परमाणुओं के संश्लेष से उल्का, मेघ तथा इन्द्रधनुष आदि का सृजन होता है। आधुनिक भौतिकी भी इसी तथ्य को स्वीकार करती है कि उल्का, मेघ तथा इन्द्रधनुष परमाणुओं का एक विशेष संघात है। यही नहीं छाया, आतप शब्द और अन्धकार को भी पुद्गल का रूप माना गया है। जैनाचार्यों ने पुद्गल के ध्वनिमय परिणाम को 'शब्द' कहा है। परमाणु अशब्द है, शब्द नाना स्कंधों के संघर्ष से उत्पन्न होता है।[3] यही कारण है कि ध्वनि का स्वरूप कम्पनयुक्त (Viberative) होता है और इस दशा में ध्वनि, शब्द का रूप ग्रहण कर लेती है। आधुनिक भौतिकी के अनुसार भी ध्वनि का उद्गम कंपन की दशा में होता है, उदाहरणस्वरूप

---

१ जैन-दर्शन और आधुनिक विज्ञान, मुनि श्री नगराज, पृ. ८९।

२ पाजिटिव साइन्स आफ एन्शेंट हिन्दूज, बी. एल. शील, पृ. ३६

३ जैन-दर्शन और आधुनिक विज्ञान, मुनि श्री नगराज, पृष्ठ ६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वर, यन्त्र, घण्टी, ऑरगन पाइप, पियानों के तार ये सब वस्तुएँ कंपन की दशा में रहती है जबकि वे ध्वनि पैदा करती हैं।[1] अतः विज्ञान के अनुसार शब्द का स्वरूप तरंगात्मक है। रेडियो, माइक्रोफोन आदि में शब्द-तरंगें, विद्युत प्रवाह में परिणत होकर आगे बढ़ती है और लक्ष्य तक पहुँच कर फिर शब्द रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। शब्द को लेकर एक अन्तर विज्ञान से प्राप्त होता है क्योंकि विज्ञान, शब्द या ध्वनि को एक ऊर्जा के रूप में स्वीकार करता है न कि पदार्थ के रूप में जबकि जैन-दर्शन में ध्वनि पौद्गलिक है जो लोकांत तक पहुँचती है। इस सूक्ष्म अन्तर के होते हुए भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि जैन-दर्शन का ध्वनि विषयक चिंतन आधुनिक विज्ञान की मान्यताओं के काफी निकट है जो भारतीय मनीषा का एक आश्चर्यजनक मानसिक अभियान कहा जा सकता है।

परमाणु-शक्ति और जैन मत

परमाणु के उपयुक्त स्वरूप के प्रकाश में जैन-दर्शन में परमाणु-ऊर्जा (शक्ति) के भी न्यूनाधिक संकेत प्राप्त होते हैं। परमाणु शक्ति के दो रूप एटम तथा हाइड्रोजन बम है जो क्रमशः फिशन तथा फ्यूजन प्रक्रियाओं के उदाहरण हैं। फिशन का अर्थ है टूटना (या विखंडन) और एटम बम में यूरेनियम परमाणुओं के विखंडन से शक्ति या ऊर्जा का विस्फोट होता है। दूसरी ओर हाइड्रोजन बम में फ्यूजन होता है जिसका अर्थ है मिलना या संयोग। इस प्रक्रिया में हाइड्रोजन के चार परमाणुओं के संयोग से हिलियम परमाणु की रचना होती है। इस संयोग से जो शक्ति उत्पन्न होती है, वही हाइड्रोजन या उद्जन बम का रूप है। परमाणु की ये दोनों प्रक्रियाएँ इस सूत्र वाक्य में दर्शनीय है—"पूरण गलन धर्मत्वात् पुद्गलः"। हाइड्रोजन बम पूरण या संयोग धर्म का उदाहरण है और एटम बम गलन या वियोग का उदाहरण है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो पुद्गल की संरचना में परमाणुओं का यह गलन और पूरण रूप एक ऐसा तथ्य है जिसका संकेत हमें आधुनिक भौतिकी में भी प्राप्त होता है जिस पर परमाणु शक्ति का समस्त प्रासाद निर्मित हुआ है। जैन शब्दावली में एक अन्य शब्द प्रयुक्त होता है—'तेजोलेश्या' जो पुद्गल की एक ऐसी रासायनिक प्रक्रिया है जो सोलह देशों को एक साथ भस्म कर सकती है।[2] यही परमाणु की संहारक शक्ति है। आधुनिक परमाणु शक्ति केवल ऊष्मा के रूप में प्रकट होती है, पर तेजोलेश्या में उष्णता और शीतलता दोनों गुण विद्यमान हैं और शीतल तेजोलेश्या उष्ण तेजोलेश्या के प्रभाव को नष्ट कर देती है। आधुनिक विज्ञान उष्ण तेजोलेश्या को एटम तथा हाइड्रोजन बमों के रूप में प्राप्त कर चुका है, पर इनके प्रतिमारक रूपों तक वह अब भी पहुँच नहीं सका है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि जैन दार्शनिकों ने केवल अध्यात्म के क्षेत्र मे ही नहीं, वरन् पदार्थ विज्ञान के क्षेत्र में ऐसे सत्यों का उद्घाटन किया जो आधुनिक विज्ञान के द्वारा न्यूनाधिक रूप में मान्य हैं। मैं व्यक्तिगत रूप से यह महसूस करता हूँ कि जैन विचारधारा ने सही रूप में दर्शन और विज्ञान के सापेक्ष महत्व को उद्घाटित किया है और विश्व तथा ब्रह्माण्ड के सूक्ष्म अंश 'परमाणु' के रहस्य का साक्षात्कार किया है। द्रव्य या पुद्गल की यह लीला अनन्त है और अन्वेषक चिंतक यही चाहता है कि वह द्रव्य के 'अनन्वेषित प्रदेशों' तक पहुँच सके—यह जानने या पहुँचने की सतत् आकांक्षा ही "ज्ञान" के गत्यात्मक स्वरूप को स्पष्ट करती है।

○

---

१ टैक्स्ट बुक आफ फिजिक्स, आर. एम. विलोज, पृ. २४९।
२ भगवती शतक १५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org